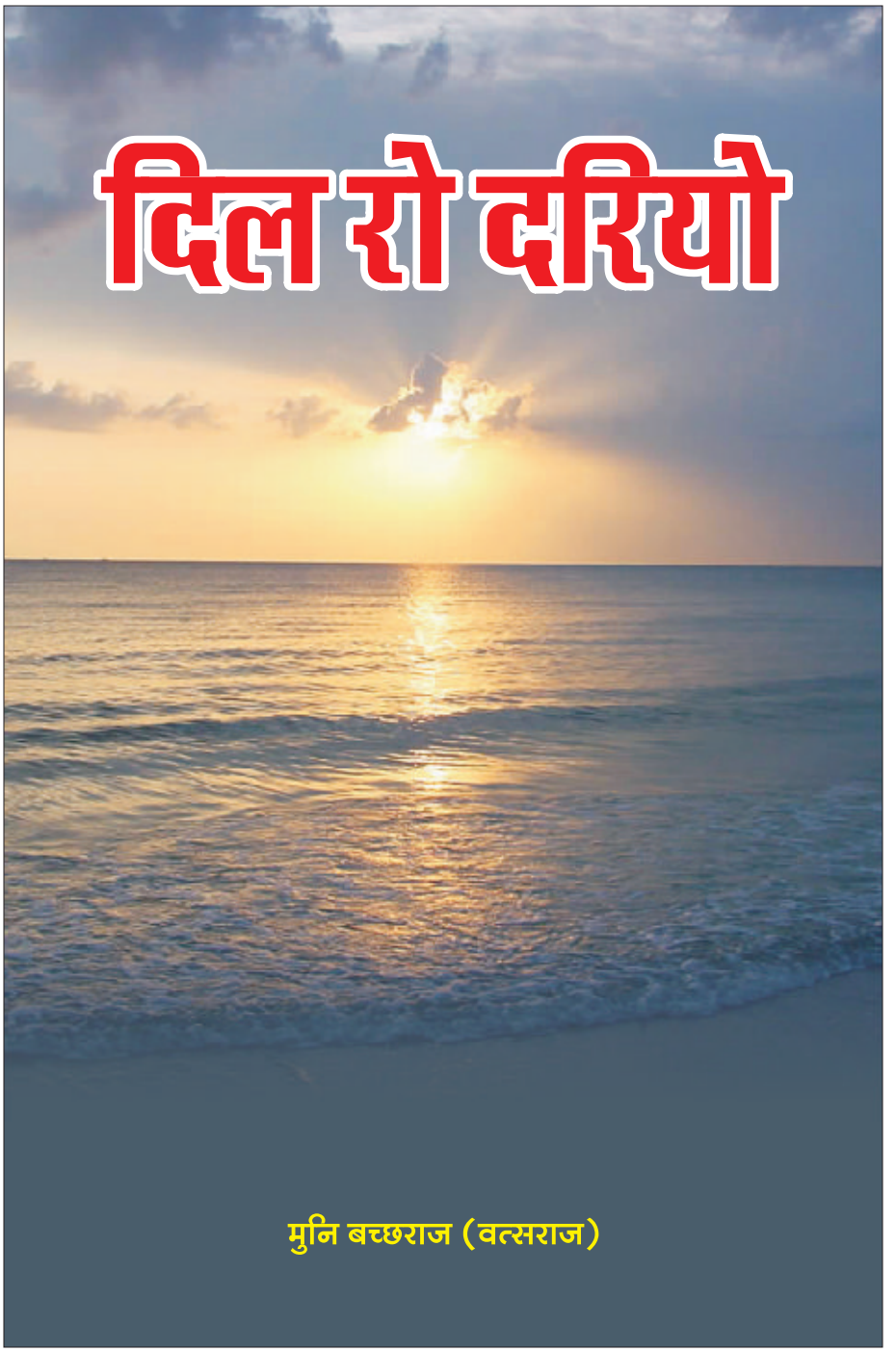

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दिल रो दरियो

मुनि बच्छराज (वत्सराज)

जैन विश्वभारती प्रकाशन

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रकाशक : जैन विश्वभारती
पोस्ट : लाडनूं-३४१३०६
जिला : नागौर (राज.)
फोन नं. : (०१५८१) २२२०८०/२२४६७१
ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

© **जैन विश्वभारती**

सौजन्य : ' शासनसेवी' स्व. मोहनलालजी संचेती की पुण्य स्मृति में
'शासनसेवी' जयचंदलाल संचेती
मोमासर ह्न अहमदाबाद

संस्करण : २०११

मूल्य : ३०/-

मुद्रक : पायोराईट प्रिंट मीडिया प्रा.लि., उदयपुर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

समर्पण

दो दो गुरुदेवां री सेवा सांतरी साझी है,
विनय बहुमान स्यूं राख्या घणा-घणा राजी है।
'दिल रो दरियो' अर्पण वां श्री महाश्रमण नै,
जका करतब ने पाळ जीत्या जीवन-बाजी है।।

मुनि बच्छराज

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

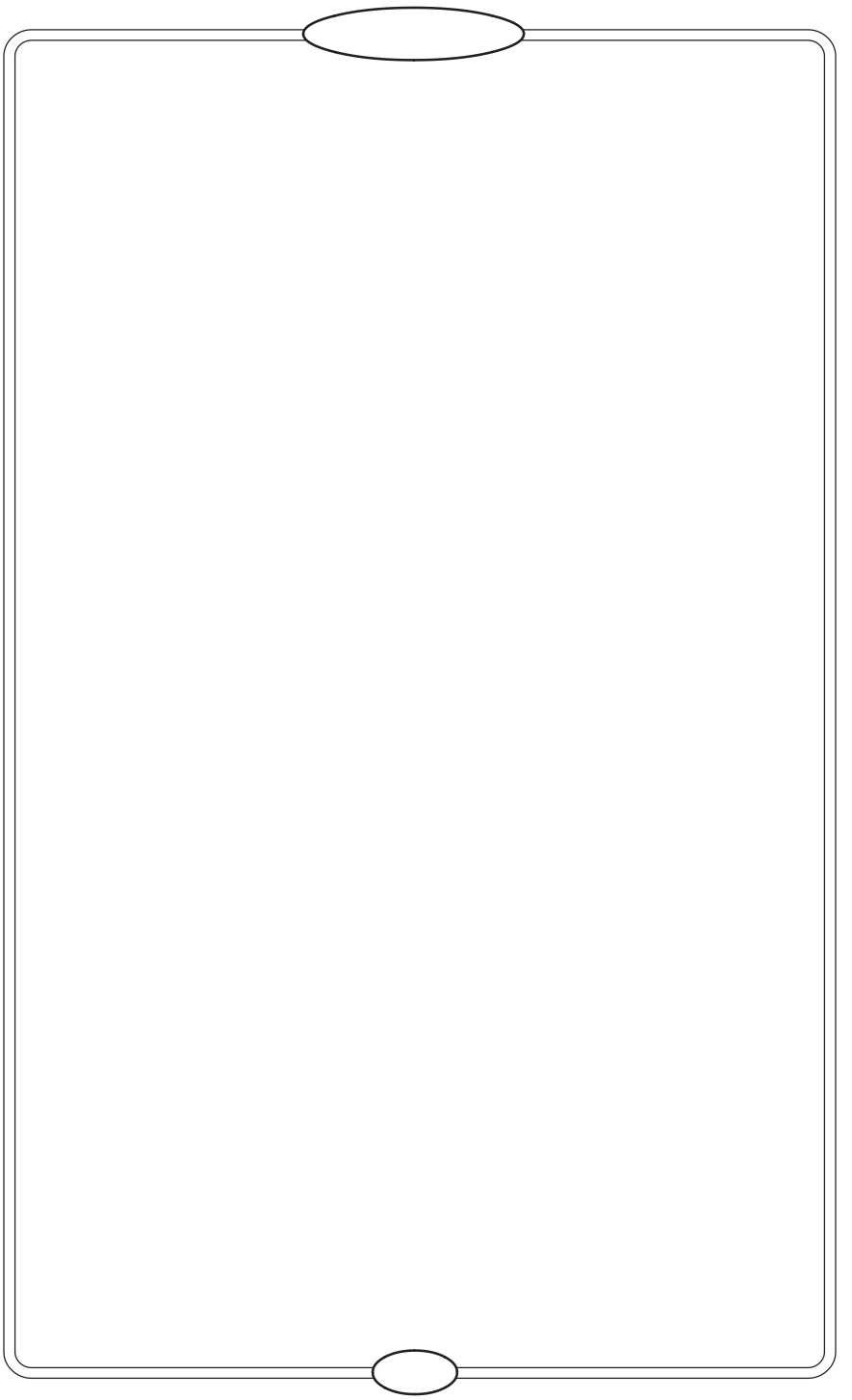

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मंगलवचन

साहित्यिक जगत में कविता का बड़ा महत्त्व है। उसके माध्यम से संक्षेप में सारपूर्ण बात सरसता के साथ प्रस्तुत की जा सकती है।

मुनिश्री वत्सराजजी स्वामी हमारे धर्मसंघ के एक विद्वान और काव्य चेतना वाले संत हैं। उनके गीतों, कविताओं में सुन्दरता के दर्शन होते हैं। 'दिल रो दरियो' पुस्तक काव्यरसिकों के लिए एक खुराक साबित हो। शुभाशंसा।

राजलदेसर — **आचार्य महाश्रमण**

१३ फरवरी २०११

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

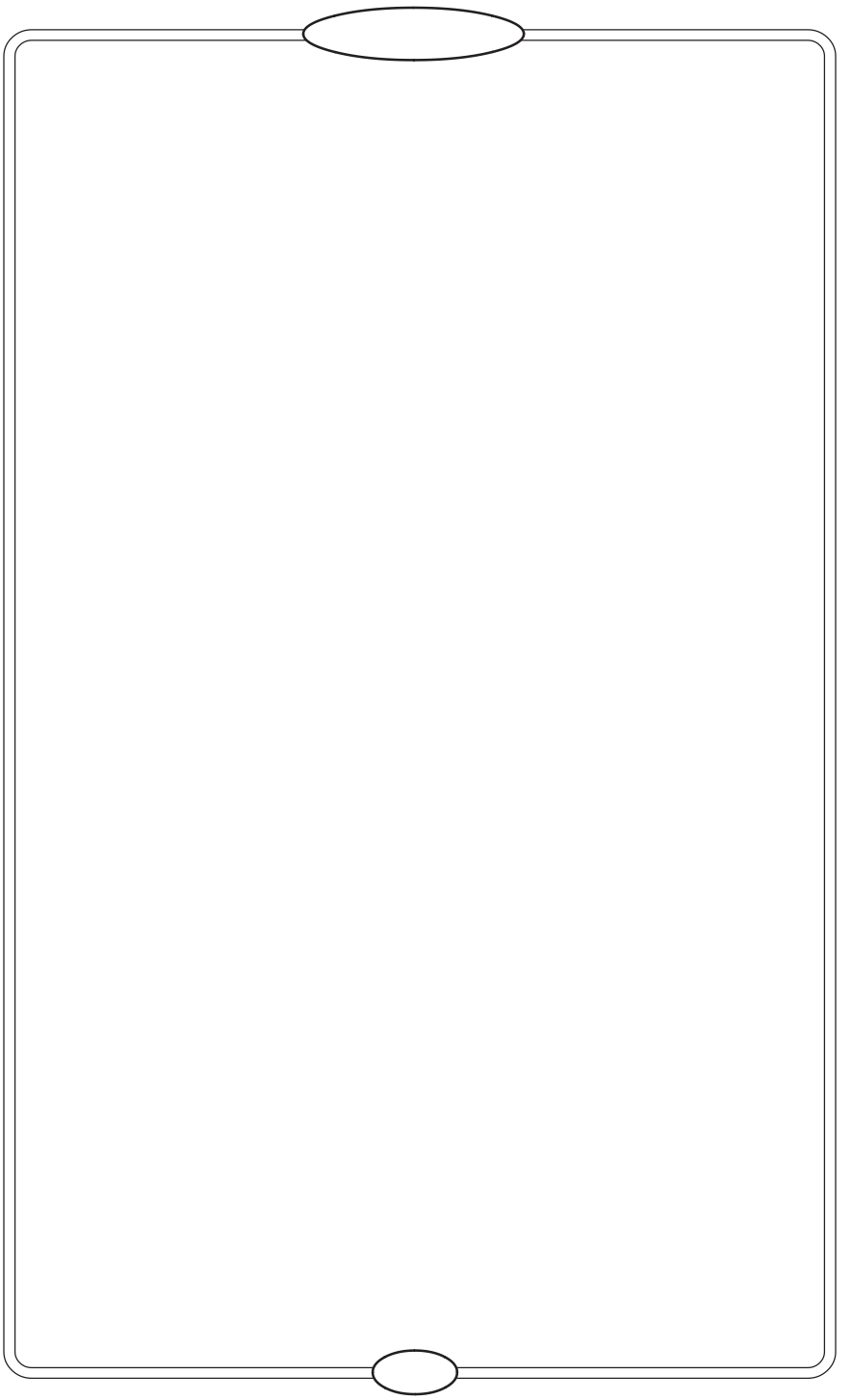

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आदिवचन

संसार में सांसां री यात्रा तो सगला ही जीवां रे सहजे ही चालै है, पण विकास रे वास्ते कीं विशेष परयास करणो पड़ै है। विकास रा पिण घणा प्रकार है। ज्ञान, ध्यान, त्याग, तप, साहित्य, संगीत, कला, कविता आदिक।

पन्द्रह साल री उम्र में संजम-यात्रा शुरू की। संजम-साधना रे सागे कुछ आगम पढ़ कंठां किया। **दाम अंटां नै ज्ञान कंठां** संतां मने आ कहावत बताई। पछे संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषा रो अभ्यास कर्‌यो। और संतां ने कविता बणातां नै सुणातां देख म्हारी पिण कविता री रुची जागी। सबस्यूं पैली संस्कृत भाषा में कुछ श्लोक, प्राकृत भाषा में कुछ गाथावां तथा हिन्दी भाषा में कुछ कवितावां, मुक्तक और गीतिकावां बणा-बणा लोगां ने सुणावतो। इयां कविता री यात्रा प्रारंभ हुई

अगवाणी बणतां ही म्हारो पेलो चौमासो जोजावर (मारवाड़, राजस्थान) में हुयो। बठै संस्कृत, प्राकृत और हिन्दी री कवितावां सुणातो जद लोग केवण लाग्याह्व'म्हे मारवाड़ी हां, म्हाने तो राजस्थानी भाषा री कविता सुणाओ।' लोगां री भावना स्यूं प्रेरणा पाई, जद राजस्थानी कवितावां बणावण लाग्यो। सबस्यूं पैली कविता बनाईह्व

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दिल रो दरियो तो सूख गयो, वाणी रा वाल्हा चालै है।
आच्छा रो पाछो छूट गयो, चमचां रा चाला चालै है।।

दूसरी कविता बनाई।

अब धरम रह्यो है बातां में,
घट में तो ज्वाला भभके है, पण माला राखै हाथां में।।

इयां बणातां-बणातां राजस्थानी कवितावां रो एक संग्रह हुग्यो। ईं रे सागे ही कुछ राजस्थानी मुक्तक और संवाद भी संकलन में जोड़ दिया।

कवितावां री रचना वास्ते दिल और दिमाग दोन्यूं चइजै। दोन्यां में पिण दिल मूल है। दरिया री भांति दिल में भावनाओं रो प्रवाह और कल्पनावां री किलोलां उठै जद कविता रो जनम हुवै है। इण कारण ईं संग्रह रो नाम रक्ख्यो है। **दिल रो दरियो।**

बादलां री विरखा स्यूं बोयोड़ो बीज फले है।
गुरवां री किरपा स्यूं चिन्त्योड़ी चीज मिले है।।

पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी तथा आचार्यदेव श्री महाप्रज्ञ म्हारी प्रगति रा महान हेतू है। आपश्री म्हारी कवितावां नै देख-सुण समय-समय म्हारे मन में उच्छाव भर्‌यो और कितीक वार आशीर्वाद-पुरस्कार भी दिया। वां महापुरषां रे वच्छल भाव ने म्हें म्हारे विकास रो बड़ो वरदान मानूं हूं।

वर्तमान आचार्यश्री महाश्रमणजी रे प्रमोदभाव और गुणानुराग रो तो केणो ही के! समय-समय आप वखाण में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भी म्हारो नाम ले'र श्रीमुख स्यूं म्हारी गीतिकावां सुणाई। आंरी महानता-उदारता स्यूं म्हें अत्यंत अभिभूत हूं। म्हारी कृति में भी आप आशीर्वर दियो है। आपरे चरणां में म्हें श्रद्धाप्रणत हूं।

म्हारी कवितावां री प्रस्तुत राजस्थानी कृति ने निहारणे, सुधारणे, संवारणे में विशेष रूप स्यूं मुनि धर्मरुचिजी तथा मुनि मोहनलालजी 'शार्दूल' रो घणो सहयोग मिल्यो। दोन्यां ही संतां रे सौहार्द ने सराहूं वै शब्द नहीं है।

रचना रे वास्ते बुद्धि रे सागे समाधी भी जरूरी है। स्वर्गीय मुनि बालचंदजी स्वामी (लाडनूं) जीवनभर मनै समाधि-सहयोग देता रह्या तथा वर्तमान में मुनि देवेन्द्रकुमारजी पचीस वरसां स्यूं म्हारे सागे रे'र सेवा-सहयोग दे रह्या है। दोन्यां रे योग ने म्हें गुरुदेवां रो बड़ो अनुग्रह और म्हारो सौभाग मानूं हूं। ईं वरस मुनि नरेशजी को भी सहयोग मिल्यो। सभी सहयोगियां रे प्रति शुभकामना।

डॉ. किरणचंदजी नाहटा एक जाणीजता-मानीजता साहित्यकर्मी श्रावक है। राजस्थानी भाषा और साहित्य रे खेतर में घणां वर्षां स्यूं काम कर रह्या है। म्हारे स्यूं वांरो पुराणो संपर्क है। **दिल रो दरियो** पर आपरो प्राक्कथन लिखकर वै आपरी साहित्यिक अभिरुचि रो परिचय दियो है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

श्रावक जयचंदलालजी संचेती (मोमासर) स्वाध्याय-प्रेमी है। धार्मिक साहित्य ने पढ़े-पढ़ावै है, प्रचार-प्रसार में पिण वांरी रुचि है।

दिल रो दरियो ईं कृति रे प्रचार री बांरी दिली भावना जागी है। वांरै धार्मिक स्वाध्याय रा भाव बधता रेवै, आ कामना करूं हूं।

दिल रो दरियो ईं कृति ने पढ़ लोगां रे दिल में सरधा-सद्भावना-संवेदना जागे, ईं आशा-आशंसा रे साथ।

श्रीडूंगरगढ़ — **मुनि बच्छराज (वत्सराज)**
वि.स. २०६७
पौष शुक्ला पंचमी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सत आख्यो सुख होत है

(प्रस्तावना)

मुनिश्री बच्छराजजी (वत्सराजजी) अध्यात्म पथ रा पथिक, वै संयम और शील रा साधक ओर सत्य रा आराधक। जैन मुनि होण रै कारण सतत पाद-विहार वांरी चर्या रो अंग। चौमासे ने टाल-टाल बाकी बगत गांव-गांव ढाणी-ढाणी विचरता जैन संत संतां बाबत **बहता पानी निर्मला** री लोक अवधारणा नै ही पी पोखे। सतत विहारी आं सन्ता रै मन में न तो स्थानविशेष रै प्रति राग रा भाव जागै ओर न ही सुदीर्घ सान्निध्य रै कारण नगरविशेष रा, गांव- विशेष रा लोगां रै अनुराग में ही अै उलझै। इतरो ही नहीं, ईं चर्या रे कारण बां रो सम्पर्क सहज ही लाखूं-लाखूं लोगां स्यूं हुवै ओर परउपकार रो बांरो व्रत फलीभूत हुवै। बै गृहस्थ जीवन रो त्याग परउपकार ओर स्वकल्याण वास्तै ही तो करै है। ईं व्यापक जनसंपर्क रो बांनै एक लाभ भलै हुवै कै आलेखूं लोगां सूं मिल्या-भेंट्यां बांनै मिनख स्वभाव री झीणी ओर पुखता जाणकारी भी हुवै। आ जाणकारी साहित्यिक अभिरुचि आला मुनि वत्सराजजी जैड़ा लोगां खातर तो ओरुं फलदायी हुवै। साहित्यकार विशेष रूप सूं मानवीय मनोवृत्तियां नै ही तो उजागर करै है।

मुनि वत्सराजजी कंवलै हियै रा मितभाषी ओर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मृदुभाषी सन्त। आंरो संत-हृदय मिनखां नै अंवलै रासतै चालतै देख'र पीड़ा सूं सन्तप्त हो उठे। ओ वेदना विकल मन ही कविता रै रूप में आपरा उद्‌गारां ने व्यक्त करै है।

सत्य रा आराधक ओर साच रा पखधर मुनि जद आम आदमी नै छल-कपट ओर कूड़ रै कादै में कलीजतां देखै तद बां रै मन में गहरी पीड़ा ऊपजै ओर आ पीड़ा उण बगत ओरुं घनीभूत हो उठे जद बां नै लागै कै आज समाज रो सामान्य आदमी अीं कानी सूं फकत उदासीन ही नीं वरन बो तो उल्टौ उणी गैलै चालण नै लालायित हो रैयो है। आपरी दूणी पीड़ा ओर चिन्ता नै बै कई-कई कवितावां में उकेरी है। 'दिल रो दरियो तो सूख गयो, वाणी रा वाल्हा चालै है' कां 'अब धर्म रह्यो है बातां में' अथवा 'वाड़ काकड्यां ने खागी' जैड़ी कवितावां बांरी उणी पीड़ा री अभिव्यक्ति है। अठै बानगी रूप आं ही कवितावां मांय सूं एक कविता री चार-छे ओळयां माण्ड रैयो हूं।

जद धर्म नाम पर सिर फूटै,
जद धर्म नाम पर दिल टूटै।
आ गंगा उलटी चालै है,
जद धर्म नाम पर धन लूंटै।
अब कूण बचावै रोग्यां नै,
जद व्याधी वेदां घर आगी.....

ईण संकलन में एड़ी मोकली कवितावां है, पण जाणण जोग बात आ है कै एड़ी विषम और अंवली

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

हालातां में भी कवि रो मन कुंठित या अवरुद्ध नीं है ओर न ही निराशा बांरे काव्य रो मूल स्वर है। बांरो विश्वास है कै जै मिनख नै सूंवी सीख देवण आलो ओर संवली सुझावण वालो कोई भलो मिनख मिल ज्यावै तो बो निश्चै ही असत नै छोड'र सत रे गैळे चालवा लागैळो। आपरी इणी सोच सूं प्रेरित हुय'र बै लिखै है।

मिनख बण्यो पूरबलै पुन्न स्यूं, मिनखाचार धरम स्यूं मिलसी।
माया मिल ज्यावै धंधै स्यूं, जीवन सार धरम स्यूं मिलसी।।

कविवर मुनि वत्सराजजी ऊपर री ओळयां में जिण जीवन-सार धरम री बात करी है, उण रै साथ आ भी है कै जीवण में उण धरम री सिद्धि तप्यां-खप्यां बिना नीं है।

नर तन ओ माटी रो दीवो, तपण-खपण स्यूं जोती जलसी।
दर-दर भटके मन रो हंसो, आत्मरमण स्यूं मोती मिलसी।।

आत्मरमण रा कोडायता कवि आत्म-कल्याण रै मर्म रा भी जाणीकार है। लम्बी साधना रै पाण ही कवि इण मर्म तांई पूग्या है। वै इण तथ स्यूं भलीभांत अवगत है कै संघबद्ध जीवन री आपरी खूबियां और खासियतां है और उणरी उपयोगिता भी असंदिग्ध है, पण प्रत्येक मिनख नै आत्मकल्याण खातर तो एकत्व भावना रो ध्यान ध्यावणो ही पड़सी। इणी तथ नै उजागर करता बै लिखै है।

मेल्या भले एक पुड़िया में, पण दाणा सै न्यारा-न्यारा।
बारे भेला, मांही अलगा, वीर वचन नै पालणहारा।
भावो नित एकत्व भावना, चीणी भाव-विचार सुणावै।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ईं एकत्व भाव रो साधक ही 'सत' रै असली मर्म नै पिछाण सकै है। प्रस्तावना री शुरुआत में मुनिश्री रै सत रा आराधक होवा री जकी बात कथीजी है, बा यूं ही नीं है। अध्यात्म पथ रा पथिक ओर आत्म-रमण रा रसिक मुनिवर वत्सराजजी जैड़ा अनुभवसंपन्न संत ही सत्य रो आं शब्दां में वखाण कर सकै है।

मत तारा ज्यूं नाना जग में, सत सूरज सम एक हुवै है।
मत धारा ज्यूं नाना जग में, सत सागर सम एक हुवै है।।
पांच डालियां न्यारी-न्यारी, मूल एक है नाथ सभी रो।
पांच आंगल्यां न्यारी-न्यारी, स्थान एक ही हाथ सभी रो।
मत द्वारां ज्यूं जुदा-जुदा पण, सत मंदिर सम एक हुवै है।।

हूं म्हारो परम सौभाग्य मानूं कै ऐड़ा निस्पृह, निश्छल ओर निर्मल मुनिवर री ईं अमल-धवल काव्य कृति माथै दो-च्यार आड़ी-अंवली ओळयां माण्डण रो मोको मुनिश्री री अहेतुकी कृपा स्यूं मनै मिल्यौ। राजस्थानी काव्य संसार ऐड़ी रचनावां स्यूं अवश्य ही समृद्ध हुवैला। मुनिश्री री उज्ज्वल चेतना नै पुनः पुनः नमन।

डॉ. किरण नाहटा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनुक्रम

१. दिल रो दरियो	१७
२. अब धरम रह्यो है बातां में	१९
३. भाव जुड्यो रह ज्यावै है	२१
४. सै बातां उलटी चालै है	२२
५. जीवा में कीं सार न लागै	२३
६. मिनखाचार धरम स्यूं मिलसी	२४
७. जीवण है ओ सुख रो सौदो	२५
८. के होयो के होणो बाकी	२६
९. वाड़ काकड्यां नै खागी	२७
१०. आगी पर चढ़ रवै ऊजलो	२८
११. कियां नाव नै मिलै किनारो	२९
१२. भाई स्यूं मेल-मिलाप नहीं	३०
१३. खंभा खड्या सिखावै है	३१
१४. राम कठे स्यूं वांने मिलसी	३२
१५. दो बूंद पिघल कर बरसाज्या	३३
१६. भावां स्यूं बाजार चलै है	३४
१७. जैर झरै वो मूढ़ खरो है	३५
१८. चोखी किण विध होसी बरगत	३६

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१९. आचार आपरो कद सूझे है ३७
२०. संत जनां री समता न्यारी ३८
२१. वोही आवै आडो ३९
२२. चीणी सीखां चार सुणावै ४०
२३. पुरुसां रो परमेसर पइसो ४२
२४. ढूंढ़ो मिनखाचार कठै है ४३
२५. दोन्यूं पलड़ा हुयां बराबर ४४
२६. सत सूरज सम एक हुवै है ४५
२७. हर एक सभाव सुधर ज्यावै ४६
२८. तपण-खपण स्यूं जोती जलसी ४७

सरधा रा फूल

२९. तू सूरज बनकर आयो हो (भगवान महावीर) ५१
३०. दीपां-नन्दन सूरज सो (आचार्य भिक्षु) ५२
३१. तू राह दिखावण आयो हो (आचार्य भिक्षु) ५३
३२. चमक्यो एक सितारो (गुरुदेव तुलसी) ५४
३३. करुणा इमरत झरता-झरता (आचार्य महाप्रज्ञ) ५५
३४. साचो हीरो (आचार्य महाश्रमण) ५६

राजस्थानी मुक्तक ५९
संवाद ६५

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१
दिल रो दरियो

दिल रो दरियो तो सूख गयो, वाणी रा वाल्हा चालै है।
आछां रो पाछो छूट गयो, चमचां रा चाला चालै है।।

१

सड़कां तो सीधी बणी आज, पण बण्या आदमी टेढ़ा है,
कांकर तो जमग्या सड़कां पर, मिनखां में पड़्या बखेड़ा है।
जो भूल्यो-भटक्यो आवै तो, सड़कां तो पार पुगावै है,
पण करै भरोसो मिनखां रो, वै काली धार डुबावै है।
ऊपर तो डींगा हांके पण, अन्दर घोटाला चालै है।।

२

पाणी तो ऊंचो चढ्यो आज, मिनखां री नीची चाल हुई,
पाणी तो छण-छण हुयो साफ, मिनखां री मति विकराल हुई।
जो आकळ-वाकळ आवै तो, पाणी तो प्यास बुझावै है,
पण मिनखां आगे आवै तो, बै दिल में आग लगावै है।
अब उठग्यो न्याय कचेड़्यां में, रिश्वत रा नाला चालै है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३

बिजली अब घर-घर में आई, अंतर री ज्योती क्षीण हुई,
बिजली री ताकत बढ़गी तो, आंख्यां अब ताकतहीन हुई।
बिजली तो बटन दबातां ही, झट समझै, करे उजालो है,
सौ बार कहो, पण मिनखां रो, कद खुलै हिया रो ताळो है।
बिजली रे तेज उजाले में, हथकंडा काला चालै है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२
अब धरम रह्यो है बातां में

अब धर्म रह्यो है बातां में।
घट में तो ज्वाला भभके है, पण माला राखै हाथां में।।

१

खोटो है काम कसाई रो, बै कियां कालजा काटै है,
वो करुण नजारो देखां जद, म्हारी तो छाती फाटै है।
बै दया दिखावै कीड्यां पर, बस दानवीरता बातां में।
बै गला गरीबां रा काटै, लिख उल्टा-सुल्टा खातां में।।

२

पढ़-लिखकर कई वकील बण्या, दुनिया नै न्याय बतावै है,
बै गिटै जीवंती माखी ने, जद नोट सामने आवै है।
आंख्यां मींच अंधारो कर दे, है मिनख चांदनी रातां में।
रखवालो कोई रह्यो नहीं, अब साच रुलै है लातां में।।

३

पुड़िया में माटी भर देवै, मोत्यां री भसम बतावै है,
जन-सेवक वैद्य कहावै है, ओ कैसो फरज निभावै है।
नब्जां ने देख बतादे झट, जो घाव छिप्यो है आंतां में,
खुद उल्टा-सुल्टा चालै बै, के रोग हुयो ओ माथां में।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४

मिनखां री कीमत घटगी अब, कुरस्यां री कीमत बढ़गी है,
कलयुग में देखो कुरस्यां भी, नेता रै सिर पर चढ़गी है।
सेवा रो ढोंग दिखावै है, बहकावै कोरी बातां में,
के पीर पराई बै जाणे, बन्ध्या मतलब रे तांतां में।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३
भाव जुड्यो रह ज्यावै है

चोर चल्यो जावै पण वींरो, खोज मंड्यो रह ज्यावै है,
लोर चल्यो जावै पण जल रो, खाल भर्‌यो रह ज्यावै है।।

१

के दशा विचारा सबदां री
जलम्या के मौत हुई वांरी
गीत चल्यो जावै पण वींरो, भाव जुड्यो रह ज्यावै है।।

२

दीवो आगी रो जायोड़ो
बो रातड़ली में आयोड़ो
बो गयो पून रे लारे, वींरो, दाग पड्यो रह ज्यावै है।।

३

कद जोग मिले निरभागी ने
सै भोग मिले कद रागी ने
वासण स्यूं वस्तु बिछुड़ ज्यावै, पण, वास भर्‌यो रह ज्यावै है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४

सै बातां उलटी चालै है

ईं अजब-गजब री दुनियां में, सै बातां उलटी चालै है।
रूड़ी बातां सुण सै चिमके, कूड़ी रीतां नै पालै है।।

१

सागर सिर चाढ़ै तिणकां ने
नीचे न्हाखे मणि-मिणकां ने
पत्थर ने पूजे पाणीड़ो, मीठी मिसरी ने गालै है।।

२

मालीड़ो चूंटे फूलां ने
कद छेड़े तीखी शूलां ने
खातीड़ो काटे सीधां ने, आंका-बांका ने टालै है।।

३

सोनो उजली आभा वाळो
वीं ने पीटे लोहो कालो
ताकड़ली ऊंचे हलकां ने, भारी ने हेटे रालै है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५
जीवा में कीं सार न लागै

घट में ज्योत जग्यां बिन जीवा!, जीवा में कीं सार न लागै।
मन रो फूल खिल्यां बिन खावा-पीवा में कीं सार न लागै।।

१

बुद्धि घणी ही तीखी पाई
साची श्रद्धा हाथ न आई
दिल रो तार जुड़्यां बिन कोरो, सींवा में कीं सार न लागै।।

२

ऊंचो चढ़ बादलियो गाजै
बिना पैर आभै में भाजै
पण वरस्यां बिन कोरी बिजल्यां, खींवा में कीं सार न लागै।।

३

घर-दीवट पर थान मिल्यो है
प्रभु मिंदर में मान मिल्यो है
दिव्य शिखा बिन वीं माटी रे, दीवा में कीं सार न लागै।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

६

मिनखाचार धरम स्यूं मिलसी

मिनख बण्यो पूरबले पुन्न स्यूं, मिनखाचार धरम स्यूं मिलसी।
माया मिल ज्यावै धंधै स्यूं, जीवन-सार धरम स्यूं मिलसी।।

१

गोरो-गोरो रूपालो नर, कोप्यां कालो नाग बणै है,
लालच जाग्यां नगर निवासी, वन रो भूखो बाघ बणै है,
धोयां मेल उतरज्या मुख रो, शुद्धाचार धरम स्यूं मिलसी।।

२

मान चढ्यां भण्या-गुण्या पिण, बण ज्यावै मतवाला हाथी,
मनोमना बण ज्यावै ऊंचा, किण ही नै नीं माने साथी,
डिगर्यां मिलज्या पढ्यां-लिख्यां स्यूं,
शुद्ध विचार धरम स्यूं मिलसी।।

३

पंडित भी खंडित हो ज्यावै, कहण-रहण में छेती राख्यां,
नर पण बानर रो पद पावै, घणी चलावै जद चालाक्यां,
भोजन-रस पइसा स्यूं मिलज्या,
इमरत-धार धरम स्यूं मिलसी।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

७

जीवण है ओ सुख रो सौदो

हिवड़ा ! हाट लगा मत दुख री, जीवण है ओ सुख रो सौदो।
जिवड़ा ! जीत जगत में होसी, बणज्या आतम-जुध रो जोधो।।

१

हीरां री जद खान मिली है, धूड़ जगत री रे क्यूं छाणै?
भाग जगावण जान मिली है, खूंटी आलस री क्यूं ताणै?
छकणी छोड़ छाछ माया री, चख चेतन ! माखण रो लोधो।।

२

मिनख जमारे री माटी में, बोया बीज फलै है सारा,
मीठा-मीठा उगै मतीरा, क्यूं बोवै तूं तुम्बा खारा,
शुभ भावां री विरखा होयां, फलसी निश्चित पुन रो पौधो।।

३

कीड़ां पर कागा ललचावै, हंसा चुगणो चावै मोती,
चोर अंधेरे नै ही चावै, संतां रे मन भावै जोती,
खर री अब क्यूं करै सवारी, छोड़ अरे ! हाथी रो हौदो।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

८

के होयो के होणो बाकी

के होयो के होणो बाकी
के धोयो के धोणो बाकी
बढ़तो-बढ़तो बोळो बढ़ग्यो
चढ़तो-चढ़तो चोटी चढ़ग्यो
मन रो महल मिल्यो है मोटो, सुख शय्या पर सोणो बाकी।

१

भाव-कोष री कूंची पाई
पुन री पून सुहाणी आई
वचन गुलाब चमेली मिलग्या, मनहर हार पिरोणो बाकी।।

२

सुरगां रा सुर जिणनै तरसै
मुगती रो रस जिणमें बरसै
नर-तन जोग मिल्यो पारस सो, करणो साचो सोनो बाकी।।

३

निकल खान स्यूं बारै आयो
कूट-पीट कर पिण्ड बणायो
चेतन ! बणन निखालिस सोनो, तपकर मेलो खोणो बाकी।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

९
वाड़ काकड्यां नै खागी

है आग समन्दर में लागी।
आभो निज मरजादा त्यागी।।

१

जद धर्म नाम पर सिर फूटे, जद धर्म नाम पर दिल टूटे,
आ गंगा उलटी चालै है, जद धर्म नाम पर धन लूंटे,
अब कूण बचावै रोग्यां नै, जद व्याधी वेदां घर आगी।।

२

मिनखां ने बेचै ढोरां ज्यूं, सगपण कर लूंटै चोरां ज्यूं,
शादी रे नाम करे सौदो, बन मीठा बोले मोरां ज्यूं,
कींकर वो पेट भरे पाजी, छपने री भूखड़ली जागी।।

३

ऊंचो चढ़ने रिश्वत खावै, रक्षक भी भक्षक बण ज्यावै,
जद नेता चेताचूक बणै, उलटा दिन दुनियां रा आवै,
खोटा दिन आया खेतां रा, जद वाड़ काकड्यां नै खागी।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१०

आगी पर चढ़ रवै ऊजलो

आगी पर चढ़ रवै ऊजलो, वीं सोना री सच्चाई है।
हिलै न जग रे आघातां स्यूं, वीं सीना री दृढ़ताई है।।

१

हिम्मत तोड़ण वाला तगड़ा, तूफानां रा रोला आवै,
धीरज मोड़ण वाला मोटा, आकाशां स्यूं ओला आवै,
कष्टां सामै शीश न नामे, वीं प्हाड़ी री ऊंचाई है।।

२

उमड़ उफनती नदियां आवै, मेदावारो पानी ल्यावै,
बड़वा रो उत्ताप आकरो, ज्वार आपरो जोर जतावै,
जको न छोड़े मरजादा नै, वीं सागर री गहराई है।।

३

वगसोड़ी सुख-सुविधा छोड़े, सदाचार स्यूं मुख नीं मोड़े,
दुख-दुविधा पिण माथे झेले, दुराचार स्यूं रुख नीं जोड़े,
आदर्शां में तन-मन ढाले, वा ही साची मिनखाई है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

११
कियां नाव नै मिलै किनारो

बिगड़ी विधि ने सुधरी सरधे, कियां हुवै वांरो निस्तारो।
अंवली गति ने संवली समझे, कियां नाव नै मिले किनारो।।

१

बात-बात में ल्यावै लाली,
खावै खार सुणावे गाली।
वीं नै रोब-रबाव जतावै, कियां खिले वांरो उणियारो।।

२

रगड़ा-झगड़ां में तन तगड़ो
मद-मगरूरी में मन मगरो
बण्या गुमानी बड़पन मानी, कियां मिटे वांरो अंधियारो।।

३

भला मिनख ने माने भोलो
लगे ठगोरो पूत सतोलो
करे कपट माने चतुराई, कियां हुवे वांरे उजियारो।।

४

संग्रह-कुग्रह लारे लाग्यो
फिरे रात-दिन भाग्यो-भाग्यो
वींने माने सुख रो कारण, कियां हुवे दुख स्यूं छुटकारो।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१२
भाई स्यूं मेल-मिलाप नहीं

गाभे रे फाट्यां कारी दे, आभे रे फाट्यां के लागे।
भूल्या-भोलां ने सीख लगे, स्याणा-समझू ने के लागे।।

१

अन्धेरो आंख्यां मींच कियो,
के वांके आगे धरे दियो।
हेलो सुण जागे सोयोड़ा, पण फेल करे बै के जागे।।

२

भीतर तो भारी पाप भर्‌यो,
ऊपर ऊंचे स्वर जाप कर्‌यो।
चोखो चश्मो पण काम नहीं, आवे नकली आंख्यां आगे।।

३

पइसा ने सौक्यूं मान लियो,
पर-खून चूस कीं दान कियो।
भाई स्यूं मेल-मिलाप नहीं, के जुड़सी बै सांई सागे।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१३
खंभा खड्या सिखावै है

थे जुगत जोग री सीखो तो, ए खंभा खड्या सिखावै है।
छोटा-मोटा सगला ने ही, ए मारग सही बतावै है।।

१

खुद डरे न काला सांपां स्यूं,
जग नै न डरावे आपा स्यूं।
आं पर तो जैर चढ़े कोनी, ए जोगी सध्या सुहावै है।।

२

नित मौन रवै, ए कद बोले,
ए अडिग खड्या है, कद डोले।
संकल्प-विकल्प उठे कोनी, ए अमन रूप दिखलावै है।।

३

कद कांपे सरदी में काया,
कद टोहे गरमी में छाया।
लूआं-आन्ध्यां बिरखा आयां, समभाव सदा अपनावै है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१४
राम कठै स्यूं वांने मिलसी

रावण-सो आचार जकां रो, राम कठै स्यूं वांने मिलसी।
बोया बीज बबूल बाग में, आम कठै स्यूं वांने मिलसी।।

१

रवे न सिचलो, घणो अचपलो, बण्यो बानरो-सो मन भटकै,
बिना हाड री कंवली जीभा, बोले जद भाटो सो पटकै,
सांपां-सी फुंकार करै, आराम कठै स्यूं वांने मिलसी।।

२

दूर-दूर तीर्थां में जावै, पाड़ोस्यां स्यूं झगड़ो राखै,
ज्यां हाथां स्यूं फेरे माळा, वां स्यूं काट गळा नै न्हाखै,
नरक बणायो ईं जीवन नै, सुरधाम कठै स्यूं वांने मिलसी।।

३

तन री भूखलड़ी तो सुधी, मिट ज्यावै दो रोट्यां पायां,
मन री भूख घणी है ऊंढ़ी, धापै नीं धन कोठ्यां पायां,
भागा-दौड़ मचावै नित, विसराम कठै स्यूं वांने मिलसी।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१५
दो बूंद पिघल कर बरसाज्या

ऊंचे आभे रा बादलिया!, हिवड़े रै आंगणिये आज्या।
तपती धरती री छाती पर, सीतल-सीतल लहरां लाज्या।।

१

आवै है कोरा गाजणिया,
बिन बरस्यां पाछा भाजणिया।
बण सावण रा घन सांवरिया ! कथनी ज्यूं करणी दरसाज्या।।

२

है घणा भरणिया भरिया ने,
भरपूर करणिया दरिया ने।
पण पड्या साव ही सूक्योड़ा, वां सरवरियां ने सरसाज्या।।

३

खाली खेतां ने भरज्या तू,
माटी ने सोनो करज्या तू।
मटमैला रो मन उजलाज्या, पथरां रो दिल पिण पिघलाज्या।।

४

नीचे रो नीर नहीं पीवै,
ऊंचां री आशा स्यूं जीवै।
तड़फे-तरसे चित चातकिया, दो बूंद पिघल कर बरसाज्या।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१६
भावां स्यूं बाजार चलै है

भीतरले भावां रे लारे, बाहरलो व्यवहार चलै है।
चीजां स्यूं भंडार भर्‌यो पण, भावां स्यूं बाजार चलै है।।

१

मन रे अंदर छोळ उठे जद, पलटे फट आंख्यां रा डोरा,
ज्वार चढ़े है सागर में जद, बदले झट लहरां रा तोरा,
काळा-गोरा चेहरां लारे, शीशां री सरकार चलै है।।

२

एक जमीं री माटी पाई, एक कूवे रो पीयो जल है,
नीमां रे लागे निम्बोल्यां, आम्बां रै आम्बां रा फल है,
बोयोड़ा बीजां रे लारे, पोधां रो परवार चलै है।।

३

घास खिलावण वालै नै पिण, गायां मीठो दूध पिलावै,
दूध पिलावण वाले रे पिण, विषधर विष रो डंक लगावै,
अपने मूळ सभावां लारे, भलो-बुरो संसार चलै है।।

४

क्रूर कंटीली वृत्यां जाग्यां, कांटां-सी करतूतां करसी,
सरस-सजीली मन-लहरां स्यूं, सुमन सरीसो सौरभ भरसी,
संच्योड़ा संस्कारां सारूं, ऊपरलो आचार चलै है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१७
जैर झरे वो मूढ़ खरो है

समदर अंदर रै'र मगर स्यूं, बैर करै वो मूढ़ खरो है।
आगी लाग्यां घर में बैठो, खैर करै वो मूढ़ खरो है।।

१

काळी-पीळी आंधी आयां, दिन में पिण छावै अंधियारो,
कदे-कदे घनघोर घटा स्यूं, आभे छा जावै कजरारो,
पण आंख्यां नै मींच आप, अन्धेर करै वो मूढ़ खरो है।।

२

बिच्छू रै तो विष कांटे में, मो-माखी रै विष माथे में,
सांपां रै है विष दाढां में, दुरजण रै विष तन आखे में,
मुख-मंदिर री शान जीभ है, जैर झरे वो मूढ़ खरो है।।

३

ज्ञान बिना कस्तूरी खोजण, मूढ़ मिरगलो वन-वन भटके,
समझ बिना नादान पतंगो, जलते दीये जीवन झटके,
पण उज्जड़ में जाणबूझकर, पैर धरै वो मूढ़ खरो है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१८
चोखी किण विध होसी वरगत

संगत माड़ी ज्यांरी जग में, आछी किण विध होसी रंगत।
आदत मैली ज्यांरी बसगी, उजळी किण विध होसी इज्जत।।

१

विष रा बीज जमीं में न्हाख्या, पाणी सींचत पूरा पाक्या,
खोड़ खेत री काढ़े कुढ़-कुढ़, कड़वा फळ जद वांरा चाख्या,
नीयत खोटी ज्यांरी रहगी, चोखी किण विध होसी बरगत।।

२

दिवलां रो कद भाग खुले है, डर्यां आग स्यूं ईं दुनिया में,
फुलड़ां रो कद बाग खिलै है, डर्यां त्याग स्यूं ईं दुनिया में,
हिम्मत है कमजोर जकां री, साची किण विध होसी कीमत।।

३

फूळां रा गळहार बनावै, शूलां नै कुण गळै लगावै,
दूध गाय रो ही मन भावै, थोर-आक रो कुण जन चावै,
लत ही नीची ज्यांरी पड़गी, ऊंची किण विध होसी हालत।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१९

आचार आपरो कद सूझे है

आंख्यां ने आकार आपरो कद सूझे है।
चलनी देखे छेद एक सूई रे नाके,
छेदां रो भरमार आपरो कद सूझे है।।

१

कंवळे पग में भाग्यो तीखो कांटो खटके,
ठोकर लाग्यां आडो न्हाख्यो भाटो खटके,
करड़ा कांटा आप बण्या बै मग रा रोड़ा,
मिनखां ने आचार आपरो कद सूझे है।।

२

मीठा बोर-मतीरा मुख ने प्यारा लागे,
मेथी-कैर-करेला खायां खारा लागे,
स्वाद जगत री जिनसां रो जाणे जीभड़ली,
पण बोले जद खार आपरो कद सूझे है।।

३

थान घणा ही नाप्या नागी गज री लकड़ी,
धान घणा ही तोल्या रहगी खाली तकड़ी,
आसे-पासे रै आंगण में करे चानणो,
दिवले ने अंधार तले रो कद सूझे है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२०

संत जनां री समता न्यारी

संत जनां री समता न्यारी,
रवै न कोई ऐड़ो-छेड़ो, जागी सोई सुरता बांरी।।

१

पी-पी जग रो जैर पचावै, मन-वाणी इमरत उपजावै,
ले समदर रो खारो पाणी, मेहड़लो मीठो बरसावै,
आभै चढ़ पिण नमै बादळा, ऊंचा री उत्तमता न्यारी।।

२

कड़वा सुण पिण कंवळा बोले, लठ रे लारे लठ कद होवै,
अंवळा ने पिण संवळे तोले, शठ रे सागे शठ कद होवै,
दूध मंथ्यां पिण माखण देवै, मधुर मनां री ममता न्यारी।।

३

खाद मिली खेतां में खारी, उपजी मीठी ईखड़ली है,
मिनखां ! खार न ल्याणो मन में, देवे साची सीखड़ली है,
गन्ना खुद पिलकर रस पावै, सरसपणां री रमता न्यारी।।

४

तपै आप तो तावड़िये में, पर-हित शीतल छांव बिछावै,
सहै आप तो ठंडा-उन्हा, पिण दूजां री तपन मिटावै,
फळ दे पत्थर मारणिये ने, रुंखड़लां री खमता न्यारी।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२१
वोही आवै आडो

जको आपरो हुवै बखत पर, वोही आवै आडो।
काम पड्यां स्यूं मेळ खावतो, लोही आवै आडो।।

१

आभै न्हाख्यो प्हाडां पटक्यो, धरती पिण दुत्कार्‌यो,
ठोड़-ठोड़ काढ्यो पाणी ने, सागर ही सत्कार्‌यो,
घुल्यो स्रोत में स्रोत आपरो, नेह निभावै गाढ़ो।।

२

मार पड़ै जद माथे माथे, हाथ आपरो आवै,
रेत गिरे उड़ आंख्यां में जद, पलकां फट जुड़ ज्यावै,
माटी ही भर सके आप स्यूं, ईं माटी रो खाडो।।

३

आगी ऊपर चढ़ आगी-सो, गरम बण्यो है पाणी,
छूयां हाथ बले, आगी रो, धरम धर्‌यो है पाणी,
आग बुझावै वोही पाणी, बैर जतावै ठाढ़ो।।

४

कोण आपरो कोण परायो, भेद जाणल्यो पेलां,
जिण-तिण रो जो कर्‌यो भरोसो, तो बाजोला गेला,
कैवत साचीह्न**सूतां री तो भैंस जणै है पाडो**।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२२
चीणी सीखां चार सुणावै

चोखी-चोखी चुनल्यो चतुरां ! चीणी सीखां चार सुणावै।
लाखीणी है लिखल्यो लोकां ! सीधी लीकां चार लिखावै।।

१

(उज्ज्वलता)

मेलां न कद मान मिल्यो है, उजळां रो ही आदर होवे,
मेला कपड़ा न्हाख शिला पर, मार मोगर्यां धोबी धोवे,
आचरणां नै उजला करल्यो, उजली चीणी सार बतावै।।

२

(मधुरता)

खारी चीजां खोटी लागे, मीठी लागे मोहनगारी,
मुंह मचकोड़ बीदाम थूक दे, बहुमोली पिण जो व्है खारी,
मुख स्यूं मीठा बोलो मिनखां!, चीणी मधुर पुकार सुणावै।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३

(मिलनसारिता)

अकड़ाई स्यूं अलगा पड़ज्या, मिलनसार सब स्यूं रल-मिलज्या,
भर्‌यो छलाछल दूध कटोरो, मान मिटा चीणी घुल-मिलज्या,
मिले मिलन स्यूं लाभ सवायो, चीणी प्यार-दुलार सिखावै।।

४

(एकत्व भावना)

मेल्या भले एक पुड़िया में, पण दाणा से न्यारा-न्यारा,
बारे भेला, मांही अलगा, वीर वचन ने पालनहारा,
भावो नित एकत्व भावना, चीणी भाव-विचार सुणावै।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२३
पुरुसां रो परमेसर पइसो

पुरुसां रो परमेसर पइसो, हार हियारो, नयन सितारो।
प्राणां रो प्राणेसर पइसो, मन रो मोती मोहनगारो।।

१

पइसा रे बळ रो के कहणो, जुग-जुग रो इतिहास जतावै,
पइसा रे फळ रो के कहणो, जन-जन रो विसवास बतावै,
लोकां रो लोकेसर पइसो, आस्तिक-नास्तिक सब नै प्यारो।।

२

जो चावो पइसा स्यूं पावो, स्थान, मान, सामान खरीदो,
पशु-पक्षी, इन्सान खरीदो, मिंदर जा भगवान खरीदो,
कळजुग रो कामेसर पइसो, पूर्ण कामना करनेवारो।।

३

सुख-सुविधा जीवन में भर दे, जीते-जी ओ सुरग दिखावै,
दुख-दुविधा सगळी ही हर दे, ईं दुनियां में मुगत मिलावै,
धरती रो धरमेसर पइसो, धन-धन ध्वनि बज करे नगारो।।

४

झूठो पिण रिश्वत दे जीते, अनपढ़ मोटी डिगर्यां पावै,
पइसो पायां धर्मसभा में, पापी ने पिण प्रमुख बणावै,
तीर्थां रो तीर्थेसर पइसो, जीवन-नैया खेवणहारो।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२४

ढूंढ़ो मिनखाचार कठै है

मिनख मोकळा मिले मुल्क में, ढूंढ़ो मिनखाचार कठै है।
बातां री बौछार घणी पिण, ढूंढ़ो दिल रो प्यार कठै है।।

१

पंथ धरम रा वध्या घणा पण, चोखा चालणहार किता है,
ग्रंथ नियम रा लिख्या बड़ा पण, पूरा पालणहार किता है,
संत घणा ही नाम-रूप रा, ढूंढ़ो गुण, आचार कठै है।।

२

शिक्षा वधगी शिक्षक वधग्या, पोथ्यां रो कीं पार नहीं है,
गांव-गांव शिक्षालय खुलग्या, अनपढ़ रो संसार नहीं है,
माथे मोटी डिगर्‌यां चढ़गी, ढूंढ़ो शुभ संस्कार कठै है।।

३

ढंग-ढंग री दवा-चिकित्सा, अंग-अंग रा डाक्टर न्यारा,
फीसां ओर कीमतां वधगी, बिल लख दिल बैठे बेचारा,
वधै न दूजी आध्यां-व्याध्यां, ढूंढ़ो वो उपचार कठै है।।

४

तन-मन रो विज्ञान वध्यो है, वध्या मनोरंजन रा साधन,
मन रा रोगी मन रा डाक्टर, मंतर-जंतर रो आराधन,
जन-जन माथे टेंशन भारी, ढूंढ़ो मन निरभार कठै है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२५
दोन्यूं पलड़ा हुयां बराबर

दोन्यूं पलड़ा हुयां बराबर, तोल सही हुवै है लोगां!
दोन्यूं लोक सुधारे वींरो, मोल सही हुवै है लोगां!।।

१

दोन्यूं हाथ मिल्यां स्यूं धुलसी, धोणे वाला सगळा जाणै,
दोन्यूं पांव चल्यां स्यूं चलसी, चलणै वाला सगळा जाणै,
काम कर्यां स्यूं कियो आपरो, कोल सही हुवै है लोगां!।।

२

राम नाम री फेरे माळा, काम करे रावण सा काळा,
कियां पूगसी परम धाम में, उल्टे रस्ते चालण वाला,
आदर्शां में तन-मन ढाल्यां, रोल सही हुवै है लोगां!।।

३

बुद्धि वधाई पढ़-पढ़ पोथा, भाव बिना रहग्या दिल थोथा,
भव-सागर में साची श्रद्धा, नाव बिना खावै है गोता,
भावां लारे ही मिनखां रो, मोल सही हुवै है लोगां!।।

४

तर्क-तलाबां में गहरा जा, कादे-कीचड़ में कर डाले,
ज्यादा वाद-विवादां में पड़, मच्छर री भी खाल निकाले,
पय-मिसरी ज्यूं मिल्यां प्रेम स्यूं, घोल सही हुवै है लोगां!।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२६

सत सूरज सम एक हुवै है

मत तारां ज्यूं नाना जग में, सत सूरज सम एक हुवै है।
मत धारा ज्यूं नाना जग में, सत सागर सम एक हुवै है।।

१

पांच डालियां न्यारी-न्यारी, मूल एक है नाथ सभी रो,
पांच आंगल्यां अलगी-अलगी, स्थान एक ही हाथ सभी रो,
मत द्वारां ज्यूं जुदा-जुदा पण, सत मंदिर सम एक हुवै है।।

२

दायां-बायां अंग भले दो, लेकिन एक शरीर हुवै है,
काळा-धोळा रंग विविध है, किंतु एक तस्वीर हुवै है,
मत गायां ज्यूं भांत-भांत रा, सत गोरस सम एक हुवै है।।

३

कोई बाजे राजस्थानी, कोई पंजाबी, मद्रासी,
कोई बंगाली, आसामी, कोई उत्तर-दक्खिणवासी,
मत प्रांतां ज्यूं न्यारा-न्यारा, सत जनपद सम एक हुवै है।।

४

कोई खत्री, कोई बामण, कोई हरिजन, कोई माजन,
कोई मुस्लिम, कोई हिंदू, काळा-गोरा है नाना जन,
मत जातां-पांतां ज्यूं नाना, सत मानव सम एक हुवै है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२७

हर एक सभाव सुधर ज्यावै

हुशियार सुधारण वालो ह्वै, हर एक सभाव सुधर ज्यावै।
हुशियार बदलने वालो ह्वै, हर एक बणाव बदल ज्यावै।।

१

सीधो बण ज्यावै टेढ़ो थल,
मीठो बण ज्यावै बेड़ो फल।
हुशियार निकालण वालो ह्वै, हर एक तनाव निकल ज्यावै।।

२

तू पांव उठा, नजदीक सभी,
तू हेज दिखा, फिर ठीक सभी।
हुशियार घुमावण वालो ह्वै, हर एक घुमाव बदल ज्यावै।।

३

लोहो भी पिघल बणे पतलो,
मेलो भी धुप्यां बणे उजलो।
हुशियार सुझावण वालो ह्वै, हर एक चुनाव बदल ज्यावै।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२८

तपण-खपण स्यूं जोती जलसी

नर-तन ओ माटी रो दीवो, तपण-खपण स्यूं जोती जलसी।
दर-दर भटके मन रो हंसो, आत्म-रमण स्यूं मोती मिलसी।।

१

खा-पी मोद मनावण वाला, ईं दुनियां में लाखां जन है,
नाना चीजां चांवां रा पिण, लेख लिखणियां लाखां मन है,
तप-संजम रा लेख लिखण स्यूं,
मिनख जनम री पोथी खिलसी।।

२

देह-देव नै भांत-भांत रा, जाणै कितरा भोग चढ़ाया,
त्याग-विराग-विवेक बिना खा, जाणै कितरा रोग लगाया,
धर्मध्यान री लगन लग्यां स्यूं, मन री मूल मनौती फलसी।।

३

धन री बड़ी बपौती पायां, बड़भागी नर निज नै माने,
पूजा ओर प्रशंसा पायां, सौभागी सब जग में जाणै,
निज गुण स्यूं इतिहास उजलसी,
काया बण कलधोती खिलसी।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४

मिले मोकळा लोक, लोक में, लौकिक लाड लडावण वाला, वाचिक अभिनंदन कर भारी, भौतिक भेंट चढ़ावण वाला, धार्मिक नेह निभावण वाला, विरला नाती-गोती मिलसी।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सरधा रा फूल

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

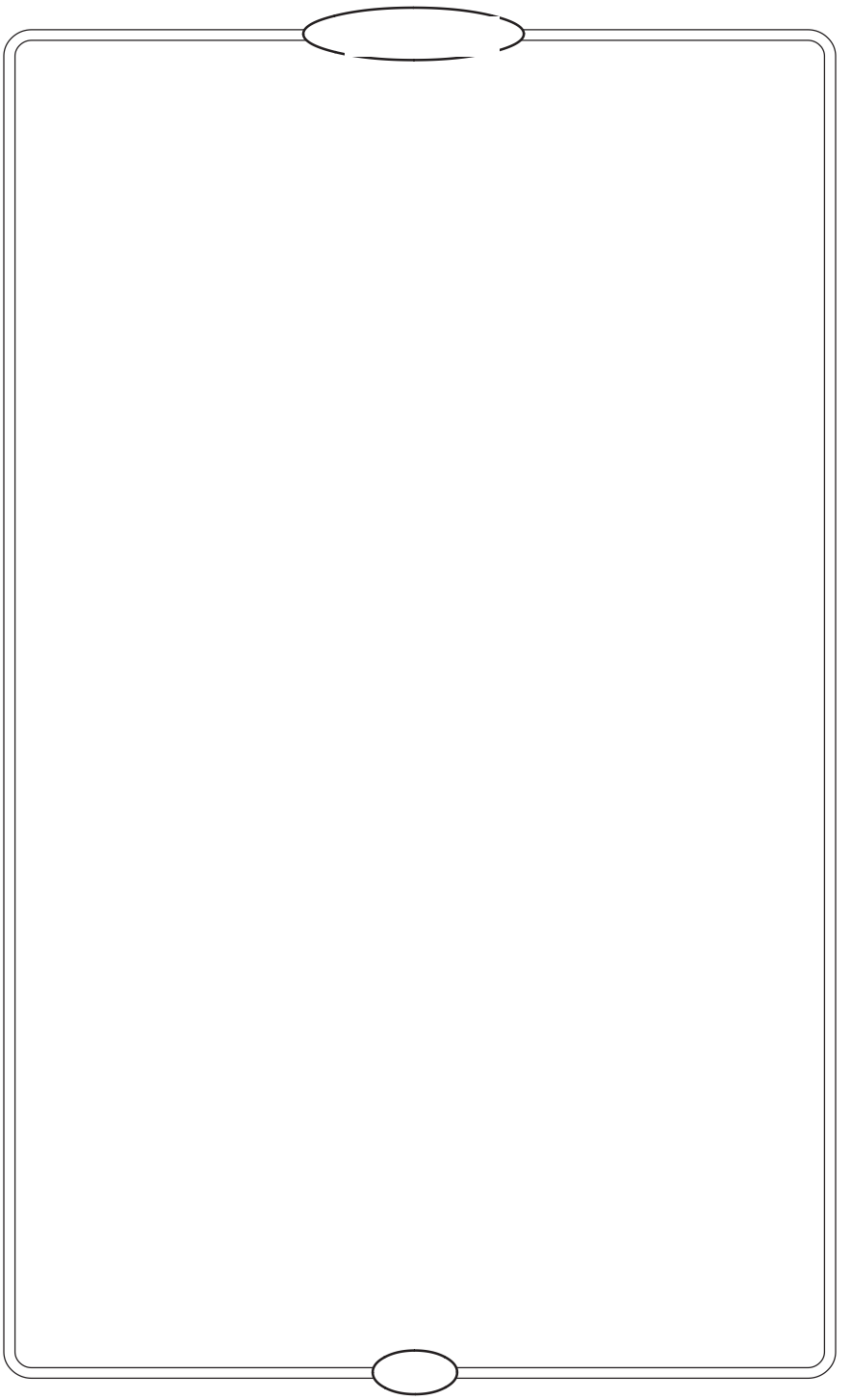

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२९

तू सूरज बनकर आयो हो

जद घोर अंधारो छायो हो,
जग हाहाकार मचायो हो।
ईं जैन-जगत रे आभे में, तू सूरज बनकर आयो हो।।

१

मिनखां रो ओ माथो के है, अनमोल कलावां रो है आलो,
पण बंद कर्म रे कारण ओ, लग रह्यो भरम रो है तालो,
सै खोलण खातर हिचक्या हा, सै जोर लगाकर पिचक्या हा,
पण ईं तालै नै खोल सके, वा चाबी तू ही ल्यायो हो।।

२

सरधा है तो दिल मानव रो, ओ घड़ो भर्योड़ो इमरत रो,
पण शंकाशील बण्यो भटके, ओ घोड़ो है अंवलि गत रो,
कोई धरती ने फोड़े है, कोई आभे में दौड़े है,
पण ईं इमरत ने खोजणियो, मां त्रिशला बेटो जायो हो।।

३

वा काली रात अमावस री, वींनै पिण पूनम-सी करग्यो,
जीवन मां जीवट ज्योत जगा, संजीवन जनता में भरग्यो,
सै दिवला जल-जल बुझ ज्यावै,
सै फुलड़ा खिल-खिल कुम्हलावै,
गुर जागण और जगावण रो, तू जग नै जबर सिखायो हो।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३०

दीपां-नन्दन सूरज सो

दीपां-नन्दन तपतो-तपतो, सूरज-सो द्युतिमान बण्यो हो।
संत भिक्षु बो चढ़तो-चढतो, भगतां रो भगवान बण्यो हो।।

१

सपन शेर रो देखण हारी, माता री के महिमा गावां,
गूंजेला ओ शेर सरीखो, ज्ञाता री के गरिमा गावां,
रघुराजा वो परख्यो हीरो, रघुपति राम समान बण्यो हो।।

२

मरुधर री माटी में उपज्यो, मनहर तरु मंदार सरीखो,
कांठे में कंटालियै जन्म्यो, मृदु फूलां रै हार सरीखो,
वर्ण सांवरो, दिल रो उजलो, नारायण उपमान बण्यो हो।।

३

लांघ गयो माया रो सागर, पौरस रो पुतलो हो पूरो,
मुक्त हुयो तृष्णा सुरसा स्यूं, साहस रो सीनो हो सूरो,
सत री सीता खोजण हारो, महावीर हनुमान बण्यो हो।।

४

अंधरी ओरी में स्वामी, सूरज तेरापन्थ उगायो,
भय भाग्यो तप-तेज सामने, यक्ष देव बणग्यो गण-पायो,
बलिदानां में तपतो-खपतो, लाखां रो भव-त्राण बण्यो हो।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३१

तू राह दिखावण आयो हो

ईं भूली-भटकी दुनिया ने, तू राह दिखावण आयो हो।
ईं आमन-दूमन दुनिया रो, उत्साह बढ़ावण आयो हो।।

१

दीवां स्यूं उपज्यो अंधेरो,
फूलां स्यूं शूलां रो ढेरो।
ईं ताप-तप्योड़ी दुनिया में, तू छांह सुछावण आयो हो।।

२

मिसरी रो स्वाद हुयो खारो,
केसर रो रंग बण्यो कारो।
ईं उलझी-पुलझी दुनिया री, तू आह मिटावण आयो हो।।

३

माया माथे पर चढ़गी जद,
छाया गेले में अड़गी जद।
दुविधा में डूबी दुनिया ने, तू थाह दिखावण आयो हो।।

४

जद आग समन्दर में लागी,
जद व्याधी घर-घर में छागी।
तू बण्यो वैद, ईं दुनियां री, दिल दाह-मिटावण आयो हो।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३२
चमक्यो एक सितारो

पृथवी पुलकी आभो उजल्यो, चमक्यो एक सितारो।
मुखड़ो मुलक्यो हिवड़ो हुलस्यो, निरख्यो नयो नजारो।।

१

दूज चांद-सम दर्शनीय हो, हृदय हुलासी तुलसी,
हर दिन बढ़तो, हर निशि चढ़तो, सदा विकासी तुलसी,
चम-चम करतो जन-मन हरतो, बणग्यो हार हिया रो।।

२

दो चांदां नें दो पलड़ां में, विधि जद तोल निहार्‌यो,
हलको तो फट आभे चढग्यो, भारी वसुधा धार्‌यो,
तुलसी-तरु-सम, तुलसी-ऋषि-सम, तुलसी लोक-दुलारो।।

३

महाभाग स्यूं मिल्यो निरालो, श्री कालू-सो गुरुवर,
महापुण्य स्यूं मिल्यो अनूठो, महाप्रज्ञ-सो पटधर,
पूरव उजलो, उत्तर उजलो, उजलो जीवन सारो।।
आगो उजलो, पाछो उजलो, उजलो जीवन सारो।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३३

करुणा इमरत झरता-झरता

नक्र-विभूषण बढ़ता-बढ़ता, विश्व-विभूषण आज बण्या है।
मजलां-मजलां चढ़ता चढ़ता, सगलां रा सरताज बण्या है।।

१

ज्ञान-साधना करता-करता, पारावार बण्या प्रज्ञा रा,
ध्यान-धारणा धरता-धरता, प्राणाधार बण्या सरधा रा,
नीति-धर्म गुण भरता-भरता, नैतिकता रा नाज बण्या है।।

२

समता-साधक सन्तपुरुष है, शिवपुर-दर्शक पन्थपुरुष है,
ज्ञान-प्रकाशक ग्रन्थ-पुरुष है, वीतराग निरग्रन्थपुरुष है,
मनहर मोती मढ़ता-मढ़ता, गुणवत्ता रा गाज बण्या है।।

३

नब्बे बरसी जीवन बल है, श्रम शोभित सार्थक पल-पल है,
अनुभव-भरियो दिल रो दरियो, पूरो पाको मीठो फल है,
करुणा इमरत झरता-झरता, महाथविर गुरुराज बण्या है।।

४

क्षमता सागे सहनशीलता, गुरुता सागे ग्रहणशीलता,
अनुशासन सागे वच्छलता, विद्या सागे विनयशीलता,
आध्यात्मिकता वैज्ञानिकता, दोन्यां रा शुभ साज बण्या है।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३४
साचो हीरो

एक ऊजली आभा वालो, महाश्रमण ओ साचो हीरो।
संघ-सिन्धु स्यूं खोज निकाल्यो, कितो करां अभिनंदन ईंरो।।

१

ज्योति-भर्‌यो ओ जानदार है,
शांति भर्‌यो शिव शानदार है।
शक्ति-भर्‌यो, गुरुभक्ति-भर्‌यो ओ, गिरिवर-सो गुणधारी धीरो।।

२

ओ हीरो है बोलण वालो,
समय जाण मुख खोलण वालो।
मुद्रा मृदु मुलकाण भर्‌योड़ी, मन मोहे मधु मौन सभी रो।।

३

ओ हीरो है चालण वालो,
घूम-घूम गुण घालण वालो।
बड़े भाग स्यूं मिल्यो सुहाणो, सिरजन हारो नई सदी रो।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

राजस्थानी मुक्तक

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

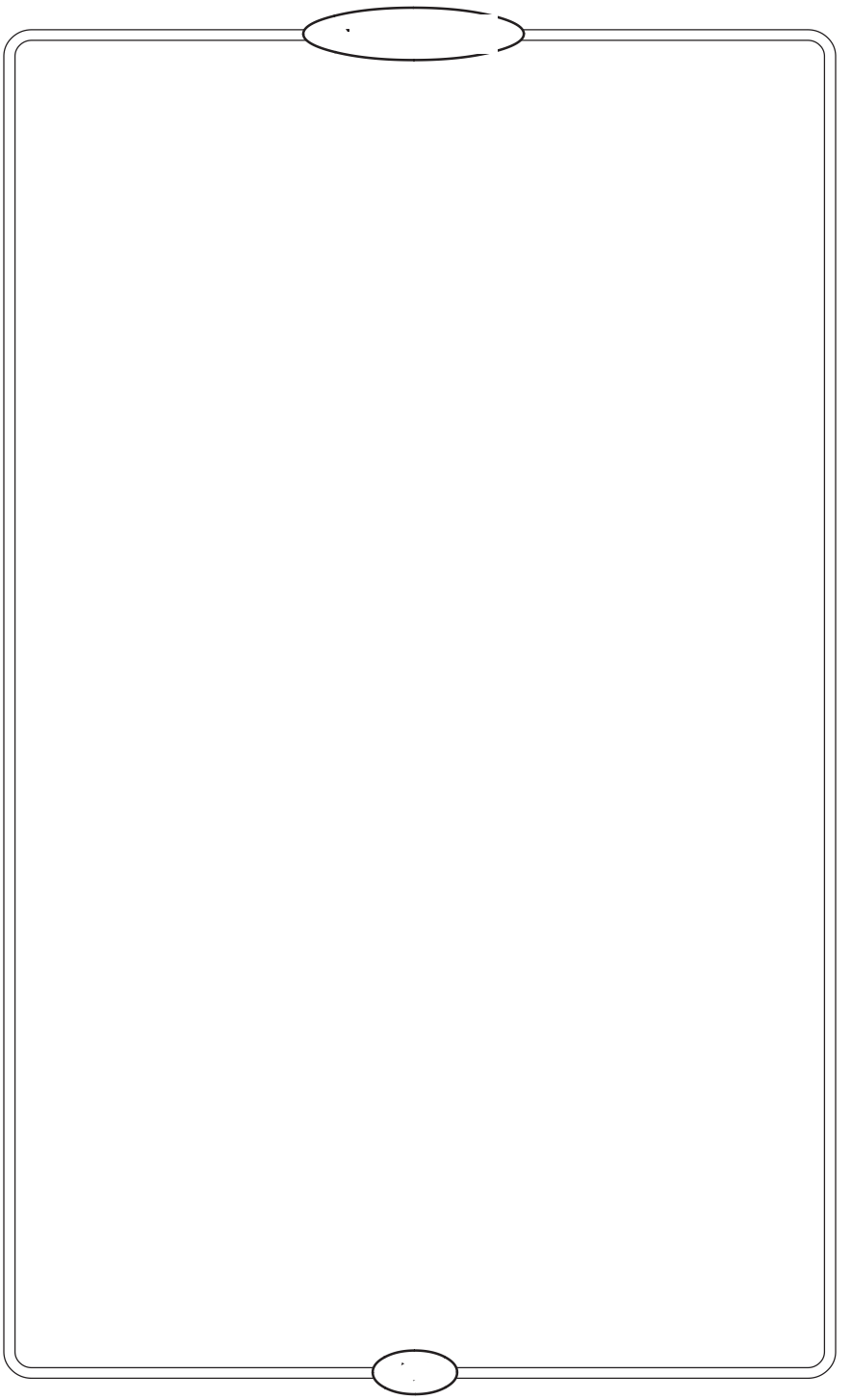

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३५
राजस्थानी मुक्तक

१

कोरे उफाण स्यूं दूध रो भलपण वधै कोनी,
थोथे डफाण स्यूं मिनख रो बड़पण वधै कोनी,
मन री ममता स्यूं आंख री कोर गीली न हुवै तो,
खाली खान-पान स्यूं आपस में सगपण वधै कोनी।।

२

काया रै वधणे स्यूं मिनख रो मोल वधै कोनी,
छाया रे वधणे स्यूं मिनख रो मोल वधै कोनी
आदमी री कीमत हुवै है कालजे रे लारे,
माया रे वधणे स्यूं मिनख रो मोल वधै कोनी।।

३

बुढ़ापो आवै जद आपरी काया भी साथ कोनी देवै,
अंधारो छावै जद आपरी छाया भी साथ कोनी देवै,
तू किसे भरोसे निचिंतो बैठो है रे भोला!
परभव जावै जद संच्योड़ी माया भी साथ कोनी देवै।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

४

आंख्यां ने मींच कोई अंधेर करे तो घणो खोटो,
समदर में रै'र मगर स्यूं वैर करे तो घणो खोटो,
अणजाणपणै तो अठीने-बठीने घणा ही भटके पण,
मारग ने जाण कुमारग में पैर धरे तो घणो खोटो।।

५

आपरो हुवै वोही बखत पर आडो आवै है,
ऊंट-बलद हुवै जद ही घर में गाडो आवै है,
जागण वाले रो ही भाग जागै है जग में,
कैवत साची है **सूतां री भैंस पाडो ही जावै है।।**

६

नीयत खोटी है तो वरकत चोखी कियां होसी,
हीमत कमजोर है तो कीमत साची कियां होसी,
कुदरत री आ कैवत है इण में फर्क कोनी पड़े,
संगत माड़ी है तो रंगत आछी कियां होसी।।

७

बीज फले कोनी त्याग रै बिना,
चीज मिले कोनी भाग रै बिना,
तपसी-खपसी वो ही कीं पासी,
दीप जले कोनी आग रै बिना।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

८

चांद ने आपरो दाग सूझे कोनी,
आंख ने आपरो राग सूझे कोनी,
मिनख ने राई भर पराई चूक दिखज्या,
आपरो मोटो सुराक सूझे कोनी।।

९

छोटो-सो-क टाबर पिण कदेइ बड़ी बात कर दे,
नान्हो-सो-क दीवो जल उजली रात कर दे,
गुणां बिन मोटो-मोटा भाटां रो के मोल,
नान्हो-सो-क हीरो लाखां ने मात कर दे।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

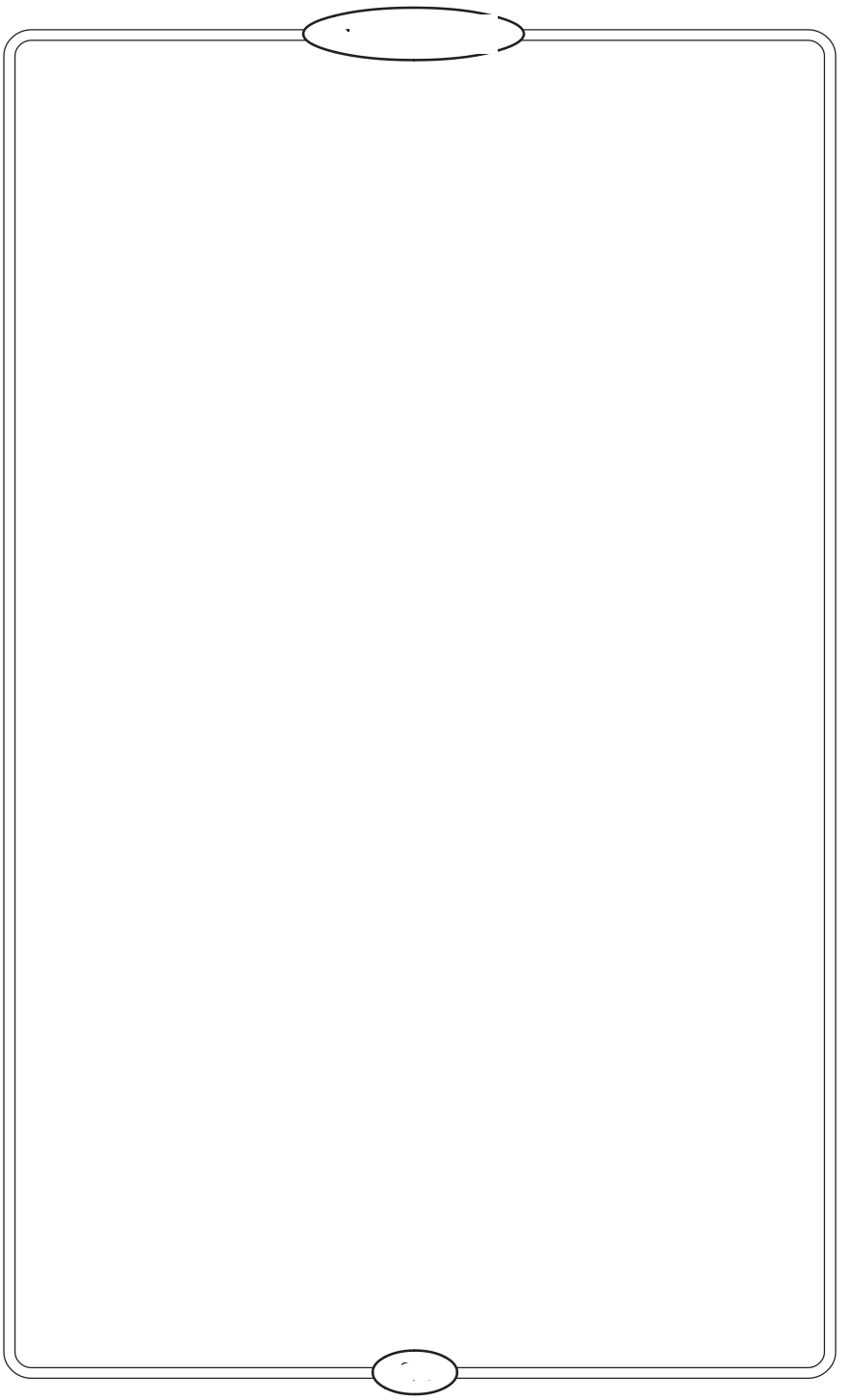

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संवाद

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

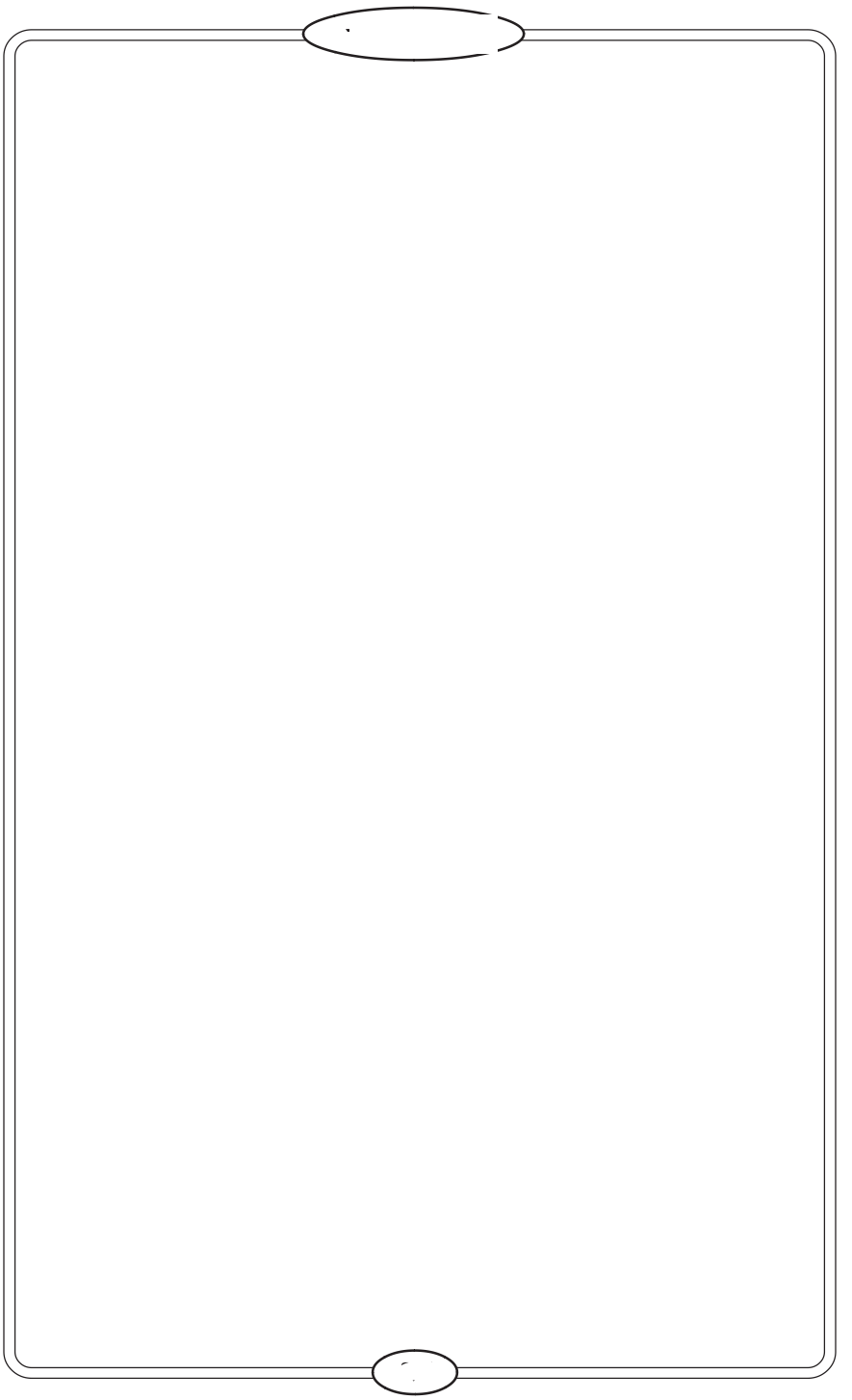

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३६
कुण के बोल्यो

अनुक्रम

१. लूण बोल्यो
२. साग बोल्यो
३. आकाश रा बादला बोल्या
४. जंगल रा रूंख बोल्या
५. नदी बोली
६. दीयो बोल्यो
७. शूलां बोली
८. गाल्यां बोली

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

लूण बोल्यो

रे साग ! तू ध्यान धर
सचाई रो ज्ञान कर
म्हारे जोग स्यूं
थारे में सुवाद आवै है
नहीं तो
फीको-फलर कीं नै भावै है।

(जद) साग बोल्यो

रे लूण! तू मत इतो मान कर
आपरा ही आपरा मत गुणगान कर
तू पिण
म्हारे जोग स्यूं आच्छो लागे है
कोरे लूण रा फाका कुण मारे है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आकाश रा बादला बोल्या

धरती रा लोकां !
थांनै जद तप्योड़ा देखां
म्हारी आंख्यां में चोसरा चालै है
हिया रो हिमालो हालै है
पण म्हे रोवां जद
थानै हंसी आवै है
कण-कण में खुशियां छावै है
थांरी आ कांई रीत ?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जंगल रा रूंख बोल्या

शहर रा लोकां !
थां मांरा टाबरह्व(लड़का और लड़क्यां)
जद म्हारे घरा आवै
म्हे वांने ठंडी-ठंडी छाया में बिठावां हां
मीठा-मीठा फल-फूल खिलावां हां
पण, म्हारा टाबर जद थांरे घरे आवै
वांने चीर-फाड़ चूल्हे में न्हाखो हो,
कद काण-कायदो राखो हो?
थांरी आ कांई रीत ?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नदी बोली*

नदी बोली ''मैं भर्योड़ी ही जणा सगला भाग्या-भाग्या आता हा। अबै खाली हुगी जद कोई पूछे ही कोनी! दुनिया मतलब री है। ओरां री के बात, जेठ रे महिनां मां ओ ऊपरलो रामजी भी म्हारी छाती पर आग वरसावण लागग्यो।

वीं वगत एक बटाऊ आयो, उभाणा पगां, न उघाड़े माथे। वो बड़ो दयालु नै परमारथी हो। जद ही म्हारी तप्योड़ी काया पर आपरै पसीना री बूंदां डाली, दो घड़ी वीं वलती लाय में म्हारे खने बैठो रह्यो।''

नदी बोली ''मैं आसीस दी 'बटाऊ थारे पगल्यां रा खोज अमिट रहिज्यो।'

वीं बटाऊ रा खोज आज भी अमिट है।''

***सिरियारी री नदी की तपती न सूखी रेत में आचार्य भिक्षु आतपना लेवण गया, वीं वखत री कल्पना।**

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दीयो बोल्यो*

सगला सूता हा, वीं विगत भी एक माई रो लाल जागतो हो, लोगां नै समझातो हो ''आख्यां नै मींच अंधारो मत करो, मिनख हो, थोड़ो चानणो करो।'' इयां समझातां रात पूरी हुगी।

दीयो बोल्यो ''म्हें जाणतो हो कै ओरां रै वास्तै आखी रात जागण वालो म्हें ही हूं, पण वीं विगत ठा पड्यो ओ तो म्हारै सूं ही आगे निकलग्यो, पण कोई बात कोनी, ओ परायो कोनी, म्हारी बैन रो ही जायाड़ो है दीपां रो बेटो है।''

***पटवोजी नै समझावण खातर आचार्य भिक्षु आखी रात जागता रह्या, वीं री कल्पना।**

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

शूलां बोली*

शूलां बोली ''फूलां स्यूं प्यार करणिया घणा, उठावणियां पिण घणां, पण म्हाने कुण उठावै? म्हारै तो धूल में रुलणो नै जूतां री मार खाणी ही लिख्योड़ी है।

एक भलो आदमी आयो। वो म्हाने उठाई, आपरै माथे री पाग पर चढ़ाई। म्हे वींरो घणो-घणो उपकार मान्यो। थांने पतो है कै म्हारे उपकारी रे माथे में मारणिया नै म्है किसोक चानणो करायो हो? वींरो हाथ फेर कदेइ उठ्यो ही कोनी।''

*बचपन में बालक भिक्षु रो काको वांरै माथे पर मारतो। जद सुरक्षा रे वास्ते बालक भिक्षु एक उपाय कर्‌यो।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गाल्यां बोली*

गाल्यां बोली ''म्हे सगला घर वालां ने खारी लागां हां, पण कोई बात कोनी, जवाइयां ने तो मीठी लागां हां। म्हाने सुणै है जद वांनै सीरे रो सुवाद दूणो आवै है।

पण एक जुवाई ईं दुनिया स्यूं नियारो ही आयो, जका नै म्हे खारी जेर लागी, म्हाने सुणतां ही मिठाई रो थाल भी वीरै हलाहल जेर बणग्यो, भाणो छोड़ भूखो ही उठग्यो, वो तो म्हां स्यूं ही धापग्यो।

खैर, कोई बात कोनी, सासरे में नीं सुणी तो साधुपणै में सुण ली।''

***आचार्य भिक्षु गृहस्थपणे में सासरे गया जणा लोक-प्रथा रे अनुसार लुगायां गाल्यां गाणी शुरू करी, तब आचार्य भिक्षु वीं कुरूढी रो अणादर कर्‌यो।**

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मुनि वत्सराज : एक परिचय

जन्म	:	वि. सं. १९८६, भाद्रव कृष्णा-३, लाडनूं (राज.)
माता-पिता	:	श्रीमती मनोहरीदेवी, श्री मेघराजजी गोलछा
दीक्षा	:	वि.सं. २००१, चैत्र कृष्णा पंचमी, लाडनूं (गुरुदेव श्री तुलसी के कर-कमलों से)
अग्रगण्य	:	वि.सं. २०१९, माघ शुक्ला १३, (राजसमन्द)
यात्रा	:	राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, गुजरात, दिल्ली
अध्ययन	:	संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, राजस्थानी आदि

कृतियां

१. आंख और पांख (मुक्तक)
२. चिनगारी (मुक्तक)
३. प्रभु प्रसाद (मुक्तक)
४. तुलसी शतदल (मुक्तक)
५. मन का मधुमास (मुक्तक)
६. उजली आंखें (लघु कविता)
७. चांदनी चिन्तन की (कविता)
८. भगवान तुम्हारे अंदर है (गीत)
१०. विराग का चिराग आख्यान)
१०. व्याख्यान-सरिता (आख्यान)
११. अनुभव की त्रिवेणी
१२. चतुष्कोण (संस्कृत)
१३. तुलसी नाम मंगलम्(संस्कृत)
१४. पञ्चरंगिप्रेक्षा (संस्कृत)

जैन विश्व भारती प्रकाशन
Order/Read Book Online on http://books.jvbharati.org
₹ 00

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org